राधावल्लभत्रिपाठिकृत अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् का समीक्षात्मक अध्ययन

चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

की पीएच०डी० (संस्कृत) उपाधि

हेतु

शोध प्रबन्धक रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ० पूनम लखनपाल

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

रघुनाथ गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, मेरठ

शोधार्थिनी

निशी

शोध केन्द्र

रघुनाथ गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, मेरठ

Scanned by CamScanner

श्रीमद्राराधावल्लभत्रिपाठिकृत अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् का समीक्षात्मक अध्ययन

संस्कृत साहित्य के काव्य या कविता अंगं की विधि व्यवस्थाओं का विवेचन, समीक्षण करने वाला शास्त्र ही काव्यशास्त्र है, जिसके लिए अलंकार शास्त्र, साहित्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र, साहित्यविद्या, क्रियाकल्प आदि विविध नामों का भी प्रयोग किया गया। 'प्राधान्येन व्यपदेशाः भवन्ति' के सिद्धान्तानुसार प्रायोगिक रूप से 'काव्यशास्त्र' संज्ञा अधिक समीचीन प्रतीत होता है, जिसमें हमे काव्य का स्वरूप, लक्षण स्वभाव, प्रवृत्ति और उसकी विभिन्न समस्याओं एवं विचार विभेदों का वैज्ञानिक निरूपण देखने को मिलता है। कविता की विविध पद्धतियों की समीक्षा और उनकी मूल प्रवृत्तियों के स्वरूप का प्रतिपादन करना काव्यशास्त्र का प्रधान कार्य है।

काव्यशास्त्र का उदय कविता के उदय के साथ ही हुआ और भारतीय कविता का मूल उत्स ऋग्वेद में है। यास्क ने निरुक्त में उपमा रूपक आदि अलंकारों पर कुछ मौलिक बातें कही हैं। पाणिानि, यास्क, भागुरि, आदि आचार्यों के सक्षिप्त संकेतों के अतिरिक्त भरत का नाट्यशास्त्र ही काव्यशास्त्रीय परम्परा का प्रथम एवं प्रामाणिक ग्रन्थ है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र नाट्यप्रधान है फिर भी भरत मुनिकृत नाट्यशास्त्र से काव्यशास्त्रियों को दिशा प्राप्त हुयी और काव्यशास्त्रीय चिंतन की परम्परा प्रवाहित हुई। इसके अनन्तर भामहकृत काव्यालंकार, दण्डीकृत काव्यादर्श, वामनकृत काव्यालङ्कारसूत्र, रूद्रटकृत काव्यालङ्कार, आनन्दवर्द्धनकृत ध्वन्यालोक, राजशेखरकृत काव्यमीमांसा अभिनवगुप्तकृत लोचनटीका, कुन्तककृत

निशी

Yam

Scanned by CamScanner

व्रकोक्तिजीवितम्, क्षेमेन्द्रकृत औचित्यविचारचर्चा, भोजराज कृत सरस्वतीकण्ठाभरण तथा प्रकाशस्तम्भवत् रहे। मम्मत के पश्चात् रूय्यक, मेंखक वाग्भट प्रथम हेमचन्द्र, विश्वनाथ, पण्डितराज जगन्नाथ, अप्पय दीक्षित आदि आचार्यों में विश्वनाथ एवं पण्डितराज जगन्नाथ विशेष प्रसिद्ध हुए। पण्डितराज जगन्नाथ के पश्चात् भी संस्कृत काव्य शास्त्र की धारा विछिन्न नहीं हुई। डा० आनन्द कुमार श्री वास्तव ने अपने ग्रन्थ आधुनिक काव्यशास्त्र में लगभग 120 प्रसिद्ध आधुनिक काव्यशास्त्रियों का तथा लगभग 70 आधुनिक टीकाकारों उल्लेख किया है। इसी परम्परा में 21 वीं शाताब्दी के आधुनिक काव्यशास्त्री है डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी। उन्होनें एक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ लिखा – अभिनवकाव्यालंकारसूत्रम्। आधुनिक काव्शास्त्री होने, ग्रन्थ की भाषा सरल व स्पष्ट होने के कारण तथा कुछ नवीन स्थापनाएँ होने के कारण इस ग्रन्थ ने शोध कार्य करने के लिए आकृष्ट किया।

आधुनिक संस्कृत विद्वानों में अग्रगण्य डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। डॉ० राधा वल्लभ त्रिपाठी का जन्म 15 फरवरी 1949 को मध्यप्रदेश के राजगढ़ (ब्यावरा) नामक मण्डल में हुआ। इनके पिता श्री डॉ० गोकल प्रसाद त्रिपाठी संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान थे। इनकी माता का नाम शकुन्तला देवी था। आठ भाई बहनों में डॉ० त्रिपाठी द्वितीय क्रम पर हैं।

डॉ० त्रिपाठी जी की प्रारम्भिक शिक्षा राजगढ़ (ब्यावरा) में, उच्च शिक्षा छत्तरपुर जिले में हुई थी। डॉ० त्रिपाठी प्रारम्भ में विज्ञान के छात्र थे किन्तु साहित्य में रूचि होने क कारण इन्होनें साहित्य को अपने अध्ययन का विषय चुना। डॉ० राधा वल्लभ त्रिपाठी ने सन् 1972 ई0 में सागर विश्वविद्यलय सागर से पी0एच0डी0

निशी

Yam

Scanned by CamScanner

की उपाधि ग्रहण की। सम्पूर्ण शैक्षिक योग्यता के आधार पर डॉ० त्रिपाठी ने विद्वत्सभा में सम्माननीय स्थान प्राप्त किया। डॉ० राधा वल्लभ त्रिपाठी 1971 ई0 से अद्यावधि पर्यन्त अनवरत संस्कृत अध्यापन, लेखन आदि कार्य कर संस्कृत सेवारत है। डॉ० त्रिपाठी को लगभग 20 राष्ट्रीय तथा अनतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। संस्कृत, हिन्दी एवं आंग्लभाषा में प्रो0 त्रिपाठी की 100 से अधिक पुस्तक प्रकाशित हुई है इन्होनें संस्कृत के अनेक नाटकों का हिन्दी अनुवाद किया है। इनके लगभग 130 शोधपत्र, लगभग 35 लघुकथा, काव्यशास्त्र का अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् भी प्रकाशित हैं।

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी आधुनिक काव्यशास्त्रियों में विशेष स्थान रखते है। अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की एक काव्यशात्रीय कृति है जिसमें सूत्र, वृन्ति, उदाहरण और परिकर श्लोकों में माध्यम से ग्रन्थकार ने अपने सिद्धान्तों की स्थापना की है। उन्होने इक्कीसवीं सदी में प्रस्तुत ग्रन्थ के माध्यम से समीक्षा के नए मानदण्ड स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया है। अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् तीन अधिकरण में विभक्त हैं। प्रथम एवं द्वितीय अधिकरण छः –छः अध्यायों में विभक्त है। तृतीय अधिकरण लघुकाय होने के कारण अध्यायों में विभाजित नहीं है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में डॉ० त्रिपाठी ने अलंकार तत्व की सर्वथा अभिनव प्रतिष्ठा की है 'अलङ्कारः काव्यजीवनम्' ।। 2.1.1.।। उन्होंने भामह, दण्डी, रूद्रट तथा जयदेवादि द्वारा स्थापित मार्ग से भिन्न अपनी बात तो कही ही है साथ ही अलङ्कारसम्प्रदाय के सम्पूर्ण संविधानक को ही परिवर्तित एवं संशोधित कर दिया

निशी

Ynm

Scanned by CamScanner

है। उन्होंने रस, गुण, रीति, वृत्ति, ध्वनि और उसके समस्त प्रभेदों को अलंकार में ही अनतर्भूत कर लिया है।

रसश्र्चापि गुणाश्र्चापि रीतयो वृत्यरत्तथा।
सर्वे ध्वनिप्रभेदाश्र्चा ये प्राचीनैरूदाहताः।।
सन्धिसन्ध्यड्.गवृत्यड्.गलक्षणानि तथैव च।
अलड्.कारस्य परिधौ सर्वे चान्तर्भवनित ते।।

(अभिनव का0 सू0, पृ0 124 – 125)

काव्यशास्त्रीय परम्परा में आधुनिक युग क परिप्रेक्ष्य में तथा भारतीय ही नहीं वैश्विक दृष्टि से काव्य के नवीन मानदण्ड प्रस्तुत करने वाले इस ग्रन्थ अद्यतन शोध प्रबन्ध दृष्टिगत नहीं हुआ है।

अतः काव्यशास्त्र में रूचि होने के कारण मैंने इस ग्रन्थ को अपने शोध का विषय चुना है। अनेक मतों को खण्डन एवं मण्डन से अलोडित कर नवीन सिद्धान्तों के नवनीत को प्रदान करने वाली सुदृढ़ एवं सुदीर्घ काव्यशास्त्रीय परम्परा में इस ग्रन्थ की नवीन मान्यताओं को प्रकाश में लाना, वर्तमान संस्कृत कविता के लिए इसकी उपयोगिता की समीक्षा करना तथा आधुनिक संस्कृत जगत् में इस काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ के महत्त्व को प्रतिपादित करना इस शोध कार्य का मौलिक उद्‌देश्य है। शेष प्रयाससाध्य है, जिसमें सुधीजन की धीनिकषा ही प्रमाण होगी।

निशी

Ym

Scanned by CamScanner

श्रीमद्राधावल्लभत्रिपाठीकृत अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्

का समीक्षात्मक अध्ययन

रूपरेखा

विषय प्रवेश – काव्यशास्त्र का परिचय

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी का जीवन परिचय

अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् का परिचय

प्रथम अध्याय – अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् में काव्यलक्षण समीक्षा

1. काव्यस्वरूप समीक्षा
2. लोकस्वरूप समीक्षा
3. अनय काव्यशास्त्रियों के मत की समीक्षा

द्वितीय अध्याय – अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् में काव्य प्रयोजन समीक्षा

1. काव्य प्रयोजन
2. मुक्ति एवं उसके भेद
3. साहित्य का मुक्तिसाधनत्व

तृतीय अध्याय – अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् में काव्यकारण समीक्षा

1. काव्य हेतु
2. प्रतिभा का काव्यकारणत्व
3. प्रतिभाजागृति के हेतु

निशी

Yam

Scanned by CamScanner

चतुर्थ अध्याय – अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् में काव्यभेद स्वरूप समीक्षा

1. उत्तमोत्तमकाव्यस्वरूप समीक्षा
2. उत्तमकाव्यस्वरूप समीक्षा
3. मध्यमकाव्यस्वरूप समीक्षा
4. अवरकाव्यस्वरूप समीक्षा
5. मम्मटकृत काव्य भेद समीक्षा
6. समीक्षक विचार

पच्चम अध्याय – अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् में शब्दव्यापार समीक्षा

1. शब्दवृत्ति समीक्षा
2. अलङ्कार व्याप्ति समीक्षा
3. शब्दार्थ सम्बन्ध समीक्षा

षष्ठ अध्याय – अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् में शास्त्रसङ्गति समीक्षा

1. शास्त्र की काव्यपूर्वकत्व समीक्षा
2. काव्य एवं शास्त्र सम्बन्ध समीक्षा
3. काव्य में शास्त्रसंक्रान्ति समीक्षा

सप्तम अध्याय – अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् में अलङ्कारस्वरूप समीक्षा

1. अलङ्कार विभाग समीक्षा
2. आभ्यनतर अलङ्कार
3. बाह्य अलङ्कार

निशी

Scanned by CamScanner

अष्टम अध्याय – अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् में कविव्यापार समीक्षा

(1) कविव्यापार भेद समीक्षा

(क) वृत्ति

(ख) रीति

(ग) मार्ग

(घ) रस

2 नवीन रीतियाँ

3 अलम्भाव स्वरूप समीक्षा

नवम अध्याय – अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् में कविव्यापार समीक्षा

1. दृश्यकाव्य

2. श्रव्य काव्य

उपसंहार

निशी

Scanned by CamScanner

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् – डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी

   अन्तर्जाल पर उपलब्ध

2. अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् – व्याख्याकार

   डॉ० रमाकान्त पाण्डेय

3. काव्यप्रकाश – आचार्य मम्मट

4. साहित्यदर्पण – आचार्य विश्वनाथ

5. आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र – डॉ० आनन्द कुमार श्री वास्तव

6. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ० वाचस्पति गैरोला

7. संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास – कृष्ण चैतन्य

8. आधुनिक संस्कृत साहित्य – हीरा लाल शुक्त

9. भारतीय साहित्य शास्त्र कोष – डॉ० राजवंश सहाय 'हीरा'

10. संस्कृत साहित्य बीसवीं शताब्दी – डॉ० राधावल्लभ वित्रपाठी

Scanned by CamScanner